युवायोगी जम्बूकुमार

मगध की राजधानी राजगृह में ऋषभदत्त नाम का एक धनाढ्य और सम्मानित व्यापारी रहता था। उसकी सेठानी धारिणीदेवी बड़ी शीलवती और सेवा परायण थी। सेठ ऋषभदत्त के घर में सोने-चाँदी के अम्बार लगे थे। किन्तु जैसे चाँद के बिना तारों से झिलमिलाता आसमान भी सूना लगता है, वैसे ही पुत्र के बिना सेठानी धारिणी का आंगन सूना-सूना सा था। एक दिन सेठ आरामशाला में बैठे सेठानी से कह रहे थे–

तभी आरामशाला में सेठ के मित्र ज्योतिषी जसमित्र ने प्रवेश किया। सेठानी के चेहरे पर उदासी देखकर उसने पूछा–

आज भाभी उदास क्यों बैठी है, क्या चिन्ता है ....

सेठ ने कहा–

मित्र, इसकी चिन्ता तो तुम जानते ही हो। सन्तान के बिना सब कुछ होते हुए भी लगता है कुछ नहीं... तुम अपने ज्योतिष ज्ञान से कुछ बताओ तो जानें ....

अभी प्रश्न लग्न लेकर बताता हूँ, भाभी की इच्छा कब फलेगी।

जसमित्र ने प्रश्न कुण्डली बनाई और प्रसन्न होकर बोला–

अब चिन्ता मत करो भाभी, शीघ्र ही आपके मनोरथ पूर्ण होने वाले हैं....

सेठ ने आश्चर्यपूर्वक देखा–

..सच.....! तुम सच कह रहे हो जसमित्र !

हाँ, मित्र ! भाभी एक ऐसे महान पुत्र की माता बनेगी जिसका यश सम्पूर्ण भरतक्षेत्र में फैलेगा। हजारों वर्ष तक उसकी कीर्ति संसार में गूँजती रहेगी....

फिर प्रश्न कुण्डली पर ध्यान देते हुए जसमित्र बोला–

आप बहुत शीघ्र स्वप्न में एक श्वेत बालों वाला केसरीसिंह देखेंगी, तब आपको मेरी बात पर विश्वास हो जायेगा।

जसमित्र की भविष्य वाणी सुनते ही सेठानी धारिणी का हृदय हर्ष से फूल उठा।

तभी द्वारपाल ने आकर सूचना दी–

श्रेष्ठीवर ! राजगृह के उद्यान में गणधर सुधर्मा स्वामी पधारे हैं...

वाह ! आज का दिन कितना शुभ है। एक के बाद दूसरा हर्ष-समाचार मिला है। चलो हम सब गणधर सुधर्मा के दर्शन कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे?

सभी ने जाकर गणधर सुधर्मा के दर्शन किये, प्रवचन सुना। और प्रश्नों का समाधान पाया।[1]

एक रात सेठानी धारिणी अपने शयन कक्ष में सोयी हुई थी। रात का अन्तिम पहर था। अचानक उसने एक स्वप्न देखा–चांद-सा सफेद बालों वाला एक केसरीसिंह उसके मुख में प्रवेश कर रहा है।

सिंह का स्वप्न देखकर धारिणी रोमांचित हो उठी।

1. जैन-धर्म का मौलिक इतिहास : भाग-२ पृष्ठ २०३-४ के अनुसार यह घटना भगवान महावीर के १४वें अन्तिम वर्षावास के समय की है।